अध्याय 6

विभिन्न परिवेशों में मानव जीवन (1)

आपने पिछले अध्यायों में पढ़ा है कि पृथ्वी के विभिन्न क्षेत्रों में भौतिक पर्यावरण एवं जीव अलग–अलग पाए जाते हैं। इसलिए किसी क्षेत्र के निवासियों एवं वहाँ के भौतिक पर्यावरण के बीच होने वाली क्रिया–प्रतिक्रिया भी अलग–अलग होती है। आइए! हम अध्याय छः एवं सात में भिन्न–भिन्न भौतिक पर्यावरणीय क्षेत्रों में मानवीय गतिविधियों को समझने का प्रयास करते हैं।

सर्वप्रथम हम मरूस्थलीय परिवेश में मानव की गतिविधियों को समझते हैं। हम विश्व में पाए जाने वाले मरूस्थलों को सामान्यतः दो वर्गों में रख सकते हैं–गर्म एवं ठंडे मरूस्थल। आइए हम पहले इनके अन्तर को समझते हैं–

गर्म एवं ठंडे मरूस्थलों में अन्तर

गर्म मरूस्थल	ठंडे मरूस्थल
ये मध्य अक्षांशों में पाए जाते हैं।	ये उच्च अक्षांशों एवं ऊँचे पर्वतीय क्षेत्रों में पाए जाते हैं।
इनमें धरातल रेतीला या पथरीला होता है।	इनमें धरातल बर्फीला होता है।
इनमें वर्षा अत्यंत कम होती है।	इनमें वर्षा बर्फबारी के रूप में होती है।
इनमें कृषि कम की जाती है लेकिन सिचांई के साधनों का विकास कर कृषि की जा सकती है।	इनमें कृषि की संभावना अत्यंत कम है लेकिन वर्तमान में ग्रीन हाउस बनाकर की जा सकती है।
सहारा मरूस्थल, अरब मरूस्थल, आस्ट्रेलिया का मरूस्थल, कालाहारी मरूस्थल, थार का मरूस्थल आदि इसके प्रमुख उदाहरण हैं।	गोबी मरूस्थल, पेटागोनिया मरूस्थल, ग्रीनलैंड, अंटार्कटिका, तिब्बत एवं लद्दाख आदि ठंडे मरूस्थल के उदाहरण हैं।

आओ करके देखें –

नीचे दिए गए चित्रों को ध्यान से देखिए। इनमें बर्फीले, रेतीले एवं पथरीले मरुस्थलों को दर्शाया गया है। इनकी सही पहचान कर नीचे दिए गए रिक्त स्थानों में इनका नाम लिखिए।

(...)   (......................................)   (......................................)

विश्व में कई गर्म मरूस्थल हैं। (पृष्ठ संख्या 47 पर दिए गए मरुस्थलों के मानचित्र को पुनः देखिए।) एक गर्म मरूस्थल हमारे राज्य के पश्चिमी भाग में भी स्थिति है जिसे हम थार का मरूस्थल कहते हैं। आगे हम इस गर्म मरूस्थल के निवासियों की सामान्य जीवन दशाओं का अध्ययन करेंगे।

1. गर्म मरुस्थल में मानव जीवन

राजस्थान में अरावली पर्वत के पश्चिम में मरुस्थल है, जो पंजाब एवं हरियाणा के दक्षिणी भागों से गुजरात में कच्छ की रण तक फैला हुआ है। इसे थार का मरुस्थल कहा जाता है। इसका अधिकांश हिस्सा राजस्थान में स्थित है। पश्चिम में इसका विस्तार पाकिस्तान तक है।

भारत में थार एवं लद्दाख की स्थिति

भौतिक दशाएँ—सम्पूर्ण प्रदेश रेतीला मैदान है, जिसमें यत्र—तत्र रेतीले टीले मिलते हैं। इन्हें बालुका स्तुप कहा जाता हैं। इसके पूर्वी भाग में अरावली की पहाड़ियाँ पाई जाती हैं। थार के इस गर्म मरुस्थल की जलवायु बहुत षुष्क है और मुख्यतः ग्रीष्म ऋतु में रेत की आंधियाँ भी चलती हैं। दिन में तापमान बहुत बढ़ जाता है वहीं रात होते—होते तापमान कम हो जाता है।

इस क्षेत्र में वर्षा बहुत ही कम होती है, जो वर्षा ऋतु में मानसूनी पवनों द्वारा होती है। वर्षा की प्रकृति अनिश्चित और अनियमित होती है। अधिक तापमान के कारण इस क्षेत्र में वाष्पीकरण अधिक होता है। अनिश्चित वर्षा होने से कभी—कभी भयंकर बाढ़ें भी आ जाती हैं। सन् 2006 में बाड़मेर जिले के कवास में एवं सन् 2015 में जालोर जिले में वर्षा ऋतु के दौरान आयी बाढ़ इसके उदाहरण हैं। कम वर्षा के कारण यहाँ अकसर अकाल की स्थिति रहती है। भूमिगत जल अधिक गहराई पर मिलता है, जो अधिकांशतः खारा होता है, लेकिन जैसलमेर जिले की लाठी सीरिज क्षेत्र में मीठा भूमिगत जल उपलब्ध है।

वनस्पति— वर्षा की कमी के कारण यहाँ वनस्पति अधिक नहीं पाई जाती है। यहाँ अधिकतर छोटे, कंटीले वृक्ष और झाड़ियाँ पाई जाती हैं। इनकी पत्तियाँ मोटी और छोटी होती हैं तथा जड़ें लम्बी और वृक्षों के तनों पर कांटे होते हैं। बबूल, खेजड़ी, रोहिड़ा आदि इस क्षेत्र के मुख्य वृक्ष हैं।

मरूस्थलीय वनस्पति

आर्थिक क्रियाएँ—यहाँ खनिज तेल, प्राकृतिक गैस, लिग्नाइट, जिप्सम, संगमरमर, इमारती पत्थर, नमक आदि कई महत्वपूर्ण खनिज पाए जाते हैं। बाड़मेर जिले से खनिज तेल का उत्पादन किया जा रहा है। यहाँ खनिज तेल के शोधन के लिए एक शोधनशाला (Refainary) भी प्रस्तावित है।

शोधनशाला पर आधारित कई प्रकार के उद्योगों के विकास की संभावना यहाँ पर है। जलाभाव के कारण यहाँ आजीविका के ज़्यादा स्रोत उपलब्ध नहीं है। यहाँ के लोगों की आजीविका अधिकांशतः पशुपालन, कृषि, मजदूरी, हस्तशिल्प आदि पर निर्भर है। खेती ज्यादा संभव नहीं है। केवल कुछ ही महीनों के लिए कृषि कर सकते हैं, जो पूर्णतः वर्षा पर निर्भर रहती है। मकानों में वर्षा के जल संग्रहण की भी व्यवस्था की जाती है। कम पानी की आवश्यकता वाली ज्वार, बाजरा, मोठ तथा मूंग प्रमुख फसलें हैं। इंदिरा गांधी नहर के विकास के बाद क्षेत्र में सिंचाई सुविधाओं की वृद्धि के कारण अब कई महत्वपूर्ण फसलों का उत्पादन और पेयजल उपलब्ध होने लगा है।

थार के मरूस्थल का एक दृश्य

पशुधन—यहाँ भेड़, बकरियाँ, गाय और ऊँट आदि पशु पाले जाते हैं, जिनसे दूध, घी, दही, मांस आदि प्राप्त किया जाता है। पशुचारण का कार्य प्रमुख रूप से किया जाता है। क्षेत्र में लगने वाले पशु मेले में लोग अपने पशुओं को बेचने या खरीदने जाते हैं।

थार के मरुस्थल में पशुचारण

उद्योग—आर्थिक दृष्टि से यह क्षेत्र अल्प विकसित है। सूती, ऊनी वस्त्र निर्माण, भेड़—बकरियों और ऊँटों के बालों से कालीन, कम्बल आदि बनाये जाते हैं। हथकरघा, हाथी दांत से वस्तुओं का निर्माण, संगमरमर की मूर्तियाँ, चमड़ें की वस्तुएँ, नमकीन जैसे खाद्य पदार्थ आदि बनाए जाते हैं। यहाँ रंगाई, छपाई आदि से संबंधित कई छोटे उद्योग—धन्धे हैं।

परिवहन—इस क्षेत्र में बस और रेल यातायात की सुविधाएँ उपलब्ध हैं। इस क्षेत्र में संचार के साधनों का भी वर्तमान में विकास हुआ है। यहाँ जोधपुर में वायु परिवहन की सुविधा है।

जनसंख्या—इस प्रदेश में जनसंख्या का घनत्व राज्य में सबसे कम है। जल के अभाव के कारण जनसंख्या छोटे—छोटे गांवों में जल स्रोतों के निकट अधिक पायी जाती हैं। नहरों के विकास से सिंचित क्षेत्रों में अब जनघनत्व तेजी से बढ़ रहा है। भौगोलिक दशाएँ अधिक प्रतिकुल नहीं होने के कारण विश्व के सभी मरूस्थलों की तुलना में इस मरूस्थल में सर्वाधिक जनघनत्व पाया जाता है।

2. शीत मरुस्थल में मानव जीवन

आइए, गर्म मरूस्थल के बाद अब हम एक ठंडे मरूस्थल का अध्ययन करेंगे। भारत के सुदूर उत्तर में स्थित जम्मू और कश्मीर राज्य के उत्तर—पूर्व में स्थित है शीत मरुस्थल लद्दाख। यह तिब्बत के पठार का ही एक भाग है। यहाँ लद्दाख, लेह और कराकोरम पर्वत श्रेणीयाँ हैं।

भौतिक दशाएँ—यह प्रदेश अधिक ऊँचाई पर होने से शीतकाल में तापमान हिमांक बिंदु से भी नीचे पहुँच जाता है। अधिक ऊँचाई के कारण यहाँ कई हिमनद पाये जाते हैं जिनसे कई नदियों का जन्म होता है। वर्ष के अधिकांश समय में यहाँ बर्फ जमी रहती है। लद्दाख ऊँचे–ऊँचे पहाड़ों के बीच फैला बर्फ का एक मैदान, जहाँ बर्फबारी अधिक होती है। वर्ष भर लोग अपना जीवन कड़ाके की ठंड में व्यतीत करते हैं।

वनस्पति— लद्दाख में शीत कटिबन्धीय झाड़ियों का आधिक्य पाया जाता है। यहाँ की घाटियों में सफेदा और वेद के वृक्ष अधिक मिलते हैं। इनका उपयोग ईंधन और मकान बनाने में किया जाता है। कुछ क्षेत्रों में सेव, खुबानी और अखरोट के वृक्ष भी बहुतायत में पाए जाते हैं।

आर्थिक क्रियाएँ—यहाँ विषम परिस्थितियाँ जीविका के ज्यादा अवसर नहीं देती। लद्दाख में भौगोलिक परिस्थितियाँ इतनी कठोर हैं कि यहाँ पर लोग छोटे–छोटे संकुलों में रहते हैं। खेती होती है, पर छोटे–छोटे खेत हैं। ठंडी जलवायु के कारण यहाँ वर्ष पर्यन्त कृषि नहीं होती है। कृषि केवल गर्मी की ऋतु में होती है। यहाँ मुख्यतः जीवन निर्वाह कृषि की जाती है। कुछ लोग ज्यादा उपज को कारगिल के व्यापारियों को जानवरों के बदले बेच देते हैं। ये लोग प्रकृति के साथ एक घनिष्ठ सम्बन्ध बना कर जीते हैं। लोग यहाँ मुद्रा के बजाय वस्तुओं का लेन–देन अधिक करते हैं।

लद्दाख क्षेत्र में पशुचारण

पशुधन—लद्दाख में पशुओं की संख्या अधिक है। इन पशुओं में भेड़ें, बकरियाँ, याक, घोड़े, ज़ो और ज़ोमो (गाय तथा याक के मिश्रित रूप) आदि प्रमुख हैं। भेड़ों, बकरियों से ऊन, दूध, मांस आदि मिलते हैं। अन्य पशु बोझा ढोने के काम आते हैं। गर्मियों में भेड़–बकरियों को लेकर ऊँचे चरागाहों में चले जाते हैं, वहाँ सर्दियों में जब ऊँचाई पर ठण्ड बढ़ जाती है तो निचले भागों की तरफ लौट आते हैं।

याक

भेंड़

जानवरों के साथ मौसमी परिवर्तन के अनुसार होने वाले पलायन को मौसमी (ऋतु) प्रवास कहा जाता है। महिलाएँ भेड़–बकरियों की ऊन से वस्त्र बनाती हैं।

क्या आप जानते हैं–

ऋतु प्रवास–हिमालय के पहाड़ों में रहने वाली कई जनजातियाँ गढ़वाल–कुमाऊँ में भोटिया, कश्मीर में बकरवाल, जम्मू, हिमाचल प्रदेश तथा उत्तराखंड में भैसों को चराने वाले गुज्जर, दक्षिण–पूर्वी लद्दाख में चांगपा, उत्तरी सिक्किम में भूटिया, अरुणाचल प्रदेश में मोन्पा जनजाति इत्यादि हैं, जो अपने पशुओं के संग मौसमी (ऋतु) प्रवास करती हैं।

उद्योग–लद्दाख जल और विद्युत शक्ति के साधनों से भरपुर है। शियोक, सिन्धु, वाका छू, द्रास, जास्कर जैसी बड़ी नदियाँ हैं। जिनका उपयोग सिंचाई और विद्युत उत्पादन हेतु किया जा सकता है। लद्दाख की कुछ नमकीन झीलों से नमक प्राप्त किया जाता है। पहाड़ी भागों में भेड़ों से ऊन और बालदार खालों से टोपियाँ बनाई जाती है। यहाँ नमदे, लोइयाँ, कम्बल और अन्य दूसरी वस्तुओं के कुटीर उद्योग संचालित हैं।

ऊन से धागा बनाती महिलाएँ

परिवहन–इस क्षेत्र में कई दर्रे स्थित हैं। कश्मीर और कराकोरम के बीच व्यापारिक मार्ग कराकोरम दर्रे से होकर जाता है। यहाँ आवागमन की सुविधा बहुत कम है, केवल पगडण्डियों एवं कच्ची सड़कों द्वारा ही आना–जाना होता है। पशु बोझा ढोने एवं आवागमन के काम आते हैं। पक्की सड़के बहुत कम है।

जनसंख्या–लद्दाख के लोग पर्वतों की घाटियों में छोटे–छोटे गाँवों में रहते हैं। घाटियों में हर जगह घर नहीं है बस कुछ–कुछ उपजाऊ भूखंड़ों पर ही पत्थर और गारे की ईंटों से बने घर मौजूद हैं, जिन्हें स्थानीय भाषा में 'खंग्पा' कहा जाता है। घरों की सपाट छतों का उपयोग पशुओं के लिए चारा जमा करने के लिए किया जाता है। लद्दाख के निवासी भारत–ईरानी और भारत–मंगोल प्रजाति के माने जाते हैं।

बर्फीले क्षेत्रों के लोग एवं उनका पहनावा

इस क्षेत्र में साल भर लोग सामान्यतः गर्म कपड़े पहनते हैं। सर्दियों में इस क्षेत्र के नदी–नाले जम जाते हैं और लोगों के लिए ये आने–जाने के रास्ते बन जाते हैं। साथ ही शरीर को गर्म रखने के लिए 'छंग' नामक एक देशी पेय का उपयोग करते हैं। दुनिया से अलग–थलग सुदूरवर्ती इलाके में रहने वाले सभी लोग जनजाति की श्रेणी में आते हैं।

आओ करके देखें–

1. अपने गाँव / शहर में लोगों के आजीविका के प्रमुख स्रोतों का पता लगाइए।
2. अपने शिक्षक की सहायता से आपके क्षेत्र में पाई जाने वाली जनजातियों के बारे में जानकारी एकत्र कीजिए।

शब्दावली (Glossary)

बालुका स्तूप – गर्म मरुस्थल में स्थित रेत के टीले।
हिमानी – पहाड़ी पर स्थित बर्फ की अथाह राशि।
दर्रा – दो पहाड़ों के मध्य में तंग रास्ता।
निर्वाह कृषि – किसान द्वारा जीवनयापन के लिए की गई कृषि।

अभ्यास प्रश्न

1. सही विकल्प चुनिए–
   (i) थार का मरूस्थल भारत के किस राज्य में स्थित है–
   (अ) राजस्थान (ब) जम्मू और कश्मीर (स) केरल (द) तेलंगना ( )
   (ii) निम्नलिखित में से किस राज्य में बर्फीला क्षेत्र पाया जाता है–
   (अ) राजस्थान (ब) जम्मू और कश्मीर (स) केरल (द) झारखंड ( )
2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–
   (i) राजस्थान में................................ पर्वत के पश्चिम में मरुस्थल है।
   (ii) लद्दाख में छोटे–छोटे घर स्थानीय भाषा में .... के नाम से जानते हैं।
   (iii) मौसम के परिवर्तन के अनुसार किया जाने वाला प्रवास ....प्रवास कहलाता है।
   (iv) ....जिले में खनिज तेल का उत्पादन किया जा रहा है।
3. थार में लोगों की आजीविका का मूल साधन क्या है?
4. मरूस्थलीय वनस्पति की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।
5. थार के मरूस्थल की प्रमुख समस्याएँ कौन–कौन सी हैं?
6. भारत में ऋतु प्रवास करने वाली प्रमुख जनजातियाँ कौन–कौन सी हैं?
7. लद्दाख में पाई जाने वाली भौतिक दशाओं का उल्लेख कीजिए।
8. गर्म एवं ठंडे मरुस्थलों में अंतर स्पष्ट कीजिए।